Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-3 | March-2025 | Page 01-06

सामाजिक समरसता के अग्रदूत के रुप में गुरु घासीदास के विचारों का विवेचनात्मक अध्ययन

[1]के.एल.टंडन, [2]डॉ.अजय कुमार शुक्ल
[1]शोध छात्र, [2]प्राध्यापक- हिन्दी
[1,2]कलिंगा विश्वविद्यालय नया रायपुर (छ.ग.)
[2]ajay.shukla@kalingauniversity.ac.in

शोध सार:-

छत्तीसगढ़ प्रांत में गुरु घासीदास को सामाजिक समरसता के अग्रदूत के रुप में जाना जाता है।छत्तीसगढ़ की निर्गुण काव्य परंपरा में गुरु घासीदास जी का नाम विशेष उल्लेखनीय है।जिन्होंने सतनाम पंथ की स्थापना करके छत्तीसगढ़ के जनमानस में सामाजिक समरसता के नये अध्याय की शुरुआत की है।उन्होंने जाति-पांति जैसी कुप्रथाओं का तार्किक रुप से खंडन करते हुए सभी मनुष्यों को एक समान बताया है।समाज में फैले हुए पाखंड,आडंबर और कुप्रथाओं का तीव्र विरोध करते हुए उन्होंने दलित,वंचित, पिछड़े लोगों को सतनाम पंथ के रुप में एक नयी राह दिखायी है।मांसाहार, मदिरा सेवन का विरोध करते हुए अहिंसा पर बल देते हुए एक बड़े वर्ग को सदमार्ग दिखाने का कार्य किया है।प्रस्तुत शोध पत्र मे सामाजिकत समरसता के अग्रदूत के रुप में उनकी भूमिका का विवेचनात्मक अध्ययन किया गया है।

बीज बिन्दु-

सामाजिक समरसता, पाखंड आडंबर और अंधविश्वास का विरोध, अहिंसा, कुव्यवसनों का विरोध, सतनाम, सत्य की प्रतिस्थापना,सदमार्ग

प्रस्तावना -

छत्तीसगढ़ प्रांत के संतपरंपरा में गुरु घासीदास का स्थान सर्वोपरि है।गुरु घासीदास का जन्म 18 दिसम्बर 1756 को छत्तीसगढ़ के बलौदाबाजार जिले के गिरौदपुरी नामक स्थान पर हुआ था।उनके पिता महंगुदास एक कृषक थें जबकि उनकी माता अमरौतिन बाई एक घरेलू

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-3 | March-2025 | Page 01-06

महिला थीं।गुरु घासीदास के जन्म के समय अनेक ऐतिहासिक परिस्थितियों की वजह से छत्तीसगढ़ की धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक स्थितियाँ दूषित हो गई थी।उस वक्त जाति-पाँति, ऊँच-नीच, छुआछूत आदि भेदभावों के कारण सामाजिक वातावरण इतना दूषित हो गया था कि मनुष्यत्व के सात्विक सम्मान पर आघात पहुँचने लगा था। ऐसी विषम स्थिति में संत गुरु घासीदास ने सामाजिक समरसता के लिए सतनाम पंथ की स्थापना करके भटके हुए लोगों को धर्म और संस्कृति का नया मार्ग दिखाया।

सामाजिक समरसता के अग्रदूत -

गुरु घासीदास के सामाजिक दर्शन में पूर्ण सामाजिक समानता का भाव निहित है। गुरु घासीदास का मानना है कि सामाजिक दृष्टि से कोई भी बड़ा-छोटा नहीं है। सबकी मुक्ति के बिना एक की मुक्ति संभव नहीं है। यह एक सच्ची आध्यात्मिकता है,और यही मानव जाति के प्रति सच्ची सेवा है। गुरु घासीदास के सामाजिक दर्शन में सभी को कल्याण की भावना से देखने का लक्ष्य रहा है। समाज में वंचित,पीड़ित और दलितों को मुख्यधारा में लाने के लिए और उनमें जागरूकता उत्पन्न करने में सतनाम दर्शन का महत्वपूर्ण योगदान है।जिससे सामाजिक न्याय की अनुभूति होती है। गुरु घासीदास का सभी के लिए केवल एक ही मंत्र था और वह है - "मनखे मनखे एक समान" अर्थात् सभी मनुष्य एक समान हैं।उनके सतनाम दर्शन का आशय समाज का कल्याण और सामाजिक सत्य की स्थापना करना था।जिसमें वह पूर्ण रुप से सफल हुए। उन्होंने सामाजिक आडम्बरों को दूर करने के लिए कहा था, जिनमें जातिवाद, अस्पृश्यता, चरित्रहीनता, मदिरापान, माँसाहार, उन्मुक्त मैथुन, नरबलि, स्त्री वध आदि आते हैं। घासीदास पूर्ण सामाजिक समानता के पक्षधर थे क्योंकि सतनाम समानता के मार्ग पर विश्वास करता है। इसलिए गुरु घासीदास सतनाम का अनुसरण करने का उपदेश देते हैं।

पाखंड आडंबर का विरुद्ध मानवता के भाव के स्थापना-

गुरु घासीदास के नैतिक दर्शन का स्त्रोत उनके उपदेश एवं उनके मौलिक सिद्धाँत है। उनका सतनाम दर्शन काल्पनिक नहीं अपितु व्यवहारिक सत्य पर आधारित है। उनके विचारों में कहीं आध्यात्मिकता व धार्मिकता का समावेश नजर नहीं आता।उन्होंने समाज के निम्न वर्ग में सामाजिक सुधार के लिए उन्हें अलौकिक जगत से खींचकर लौकिक जगत में लाने का प्रयास किया।उन्होंने पुरातनपंथियों के काल्पनिक विचार की जगह सतनाम के वास्तविक विचारों से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया। गुरु घासीदास के समय राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, नैतिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियाँ अत्यधिक अस्त-व्यस्त हो गयी थी।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-3 | March-2025 | Page 01-06

दूसरे शब्दों में पूरे देश की तरह छत्तीसगढ़ में भी बौद्धिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक अंधकार छा गया था। सती प्रथा, टोनही का वध, नरबलि, अंधविश्वास एवं अनेकों अनैतिक आचार-विचार पूरे समाज में छाए हुए थे। गुरु घासीदास ने ऐसी कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाई।उनके विचार शुद्ध बौद्धिक ही नहीं बल्कि वैज्ञानिक थे। वह साधारण इंसान बने रहकर ही इस धरती को स्वर्ग बनाना चाहते थें-

मोर संत मन मोला काकरो ले बड़े झन कइहा।
नई तो मोला हुदेसना मा हुदसे कस लागही।।

सत्य की प्रतिस्थापना –

गुरु घासीदास ने सत्य पर बल दिया और सत्य को ही ईश्वर बतलाया है। बाबा घासीदास ने असत्य मार्ग छोड़कर सत्य मार्ग पर चलने की सीख दिए हैं, जहाँ समरसता, समता, प्रेम और करुणा बसता है। वह सत्य को सर्वोपरि मानते हैं -

सत्य से धरती खड़े, सत्य से आकाश।
सत्य से सृष्टि उपजे, कह गए घासीदास।।

गुरु घासीदास कहते हैं कि मनुष्य के मन में सत्य का स्थापना तभी हो सकती है,जब उसका मन शुद्ध एवं मानवीय गुणों से परिपूर्ण हो। सत्य आचरण ही सर्वश्रेष्ठ धर्म है। सत्य आचरण ही कर्म और श्रेष्ठ मर्म है। जो सत्याचरण करता है वही सत्य अर्थात् सतनाम तक पहुँच सकता है। संत घासीदास पढ़े-लिखे नहीं थे। इसलिए कबीरदास की समान उन्होंने "मसि कागद" को छुआ तक नहीं था। निर्गुण परंपरा के अनुसार वह भी मूर्तिपूजा का विरोध करते थे।उनका मानना था सभी मनुष्यों का ईश्वर एक है और वह सभी पर समान रूप से कृपा करता है। ईश्वर को प्राप्त करने के लिए बाहर जाने की आवश्यकता नहीं है। जो उन्हें शुद्ध, सात्विक और सरल भाव से खोजता है वह उन्हें स्वयं के भीतर ही मिल जाता है। क्योंकि वह घट-घट में निवास करता है।वह निर्गुण, निराकार और निर्विकार है। उनका आदि नाम सतनाम है -
आदि नाम सतनाम है, सत्यहिं है जगसार ।
सत्यनाम के जपन ते, सब जन उतरे पार ।।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-3 | March-2025 | Page 01-06

अहिंसा के समर्थक –

गुरु घासीदास अहिंसा के समर्थक थें।उनका मानना था कि अहिंसा मानवता का प्रतीक है। किसी जीव की हत्या नहीं करने से लेकर किसी भी जीव के हृदय को चोट नहीं पहुँचाने तक की समस्त क्रियाएँ, चेष्टाएँ आ जाती है। किसी भी जीव पर आघात करना परमात्मा पर आघात करना है। जीना और जीने देना मनुष्य का कर्तव्य है। गुरु घासीदास शाकाहार को प्राथमिकता देते हैं।गुरु घासीदास ने यह संदेश दिया कि माँस-भक्षण नहीं करना चाहिए। सात्विक आहार ग्रहण करना चाहिए और साथ ही मादक पदार्थों का पूर्ण निषेध करना चाहिए। गुरु घासीदास के सिद्धाँत-दर्शन वैज्ञानिकता पर आधारित है। गुरु घासीदास ने तर्कशील होकर बताया कि मादक पदार्थ केवल मन को नष्ट नहीं करता बल्कि शरीर को भी नष्ट कर देता है। इसी प्रकार गुरु घासीदास ने महिलाओं का सम्मान तथा समाज में ऊँचा स्थान पर रखना सदाचार का श्रेष्ठ लक्षण माना है।काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि पर नियंत्रण रखते हुए कथनी और करनी पर एकता बनाए रखनी चाहिए। किसी के प्रति दुराचार, अत्याचार, दुर्व्यवहार, अनाचार नहीं करना चाहिए। ईर्ष्या, द्वेष, मिथ्या-भाषण से सदैव बचना चाहिए। अहंकार का त्याग चरित्र विकास के लिए आवश्यक है क्योंकि जहाँ अहंकार है वहाँ श्रेष्ठ चरित्र नहीं हो सकता चाहे वह अहंकार धन का हो या पद का हो अथवा बल का।गुरु घासीदास के विचार में अहंकार ही अज्ञानता का दूसरा नाम है। जबकि ज्ञानी व्यक्ति सदैव सदाचार से ही अपने व्यक्तित्व को प्रेरक बना सकता है और समाज के नवनिर्माण में अपनी अहम भूमिका प्रदान कर सकता है।

गुरु घासीदास के दार्शनिक विचार –

गुरु घासीदास के दर्शन के संदर्भ में हम देखें तो कह सकते हैं कि सप्त सिद्धाँतों का सार ही उनका दर्शन है जो इस प्रकार है –

1. सतनाम पर विश्वास करो।
2. बाह्य आडम्बर, मूर्ति पूजा मत करो ।
3. माँसाहार मत करो ।
4. नशा सेवन मत करो।
5. जाति भेद के प्रपंच में मत पड़ो।
6. परायी स्त्री को भी माता जानो और सभी स्त्रियों का सम्मान करो।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-3 | March-2025 | Page 01-06

7. गाय को हल में मत जोतो, दोपहर में हल मत चलाओ।

निष्कर्ष –

अतः हम कह सकते हैं कि सामाजिक समरसता की स्थापना में गुरु घासीदास के विचारों का सर्वोपरि स्थान है।उनके विचार सामाजिक, नैतिक, आध्यात्मिक-दर्शन वर्तमान सामाजिक धरातल पर समाज सुधार हेतु उपयोगी एवं प्रासंगिक है। उनके सिद्धाँत एवं उद्देश्य दर्शन का मूल आधार है, जो समस्त मानव कल्याण के लिए सार्थक है। उनके उपदेशों में एक ओर आध्यात्मिक आदर्श है तो दूसरी ओर सामाजिक चिंतन-दर्शन भी है। गुरु घासीदास ने अपने तपोबल, मनोबल, आत्म बल एवं अपनी आध्यात्मिक दर्शन के आधार पर सतनाम की जागृति फैलाई, जिसमें वह सफल भी हुए। आज देश-दुनिया की परिस्थिति गुरु घासीदास के काल से बहुत भिन्न नहीं है। राष्ट्र को निर्धनता, अज्ञानता, नशाखोरी, व्याभिचारी तथा मक्कारी जैसी समस्याओं से बचने के लिए आवश्यक है की हम आज गुरु घासीदास के दर्शन को जाने, समझे और अपने जीवन में उतारने का संकल्प लें। तभी समाज और देश विकास कर सकेगा। आवश्यकता है कि हम मानवीय मूल्यों को पुनः संचारित करें, उन्हें दृढ़ बनाए। इसके लिए हमें गुरु घासीदास के उपदेशों को अपने जीवन में उतारना होगा।

संदर्भ:-

1. शुक्ला संजय - समतामूलक समाज के प्रणेता गुरु घासीदास/नवप्रदेश समाचार पत्र/18 दिसंबर 2024
2. भतपहरी,डॉ.अनिल कुमार - गुरु घासीदास और उनका सतनाम पंथ/बुक्स क्लिनिक पब्लिकेशन,रायपुर, छ.ग.
3. डॉ.बलदेव,जयप्रकाश मानस,रामशरण टंडन- तपश्चर्या एवं आत्मचिंतन/राधाकृष्ण प्रकाशन ,नयी दिल्ली,2015, पृष्ठ - 161
4. भारती नरेन्द्र- गुरु घासीदास और सतनामी आंदोलन के ऐतिहासिक साक्ष्य/बुक्स क्लिनिक पब्लिकेशन,रायपुर, छ.ग.
5. शुक्ल हीरालाल - गुरु घासीदास : संघर्ष समन्वय और सिद्धांत/सिद्धार्थ बुक्स दिल्ली,पृष्ठ - 200,195
6. संस्कृति विभाग,छत्तीसगढ़ शासन के द्वारा प्रकाशित पुस्तक पूज्य संत गुरु घासीदास (250 वीं वर्षगांठ पर प्रकाशित स्मारिका)

7. कुर्रे, मनीष कुमार- संत गुरु घासीदास और उनका दर्शन/रचनाकर ब्लॉग स्पाट
8. माटी बोलती है-मेघनाथ कन्नौजे, अंकुर प्रकाशन, 1984, पृष्ठ - 31
9. सत्य ध्वज पत्रिका, 18 दिसंबर विशेषांक, 1995, अंक 20, पृष्ठ - 8,10
10. भारतीय दर्शन, उमेश मिश्र, उत्तर प्रदेश, लखनऊ, पृष्ठ –
11. सतनाम दर्शन, डॉ0 टी0 आर0 खूंटे, सतनाम कल्याण एवं गुरु घासीदास चेतना संस्थान, रायपुर छत्तीसगढ़ पृष्ठ - 328।
12. माटी बोलती है, मेघनाथ कन्नौजे, अंकुर प्रकाशन, 1984, पृष्ठ - 36 ।
13. सतनाम संदेश मासिक पत्रिका, छत्तीसगढ़ प्रगतिशील सतनामी समाज, रायपुर छत्तीसगढ़, मार्च 2018, पृष्ठ - 18।